आर्थिक सिद्धान्त- द्वितीय

खण्ड 1 : राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय की अवधारणा
राष्ट्रीय आय की संरचना
राष्ट्रीय आय तथा आर्थिक कल्याण और हरित लेखांकन
राष्ट्रीय आय के माप की विधियां
राष्ट्रीय आय के संतुलन स्तर का निर्धारण

खण्ड 2 : आय एवं रोजगार

बचत, विनियोग व आय में सम्बन्ध
सरकारी घाटे का बजट, भुगतान-संतुलन घाटा तथा राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध
आय एवं रोजगार का प्रतिष्ठित सिद्धान्त
प्रभावपूर्ण मांगः अवधारणा निर्धारक घटक एवंमहत्व
केन्जीय रोजगार सिद्धांत

खण्ड 3 : उपभोग एवं निवेश

कीन्स का उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम, उपभोग फलन एवं उपभोग परिकल्पनाएँ
अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक उपभोग फलनों की संगति
निवेश - अवधारणाएँ, प्रकार एवं निर्धारक तत्व
पूँजी की सीमान्त दक्षता एवं निवेश की सीमान्त दक्षता
आय तथा उत्पाद संतुलन में परिवर्तन- गुणक
संतुलित बजट गुणक

खण्ड 4 : कीमतें एवं रोजगार

मुद्रा की मांग
मुद्रा की मांग प्रतिष्ठित, किंजियन उत्तर किंजियन सिद्धांत
मुद्रा की पूर्ति, पूर्ति के घटक, उच्च शक्ति मुद्रा, मुद्रा गुणक
IS - LM वक्र विश्लेषण
विदेशी व्यापार एवं राष्ट्रीय आय
आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन
उत्पादन फलन, श्रम बाजार और राष्ट्रीय आय का पूर्ति पक्ष
वास्तविक मजदूरी प्रतिरूप, मौद्रिक मजदूरी प्रतिरूप और अनम्य मजदूरी ; समग्र पूर्ति फलन
मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त
मिल्टन फ्रीडमैन का मुद्रा परिमाण सिद्धान्त
मुद्रा स्फीति के सिद्धान्त - मांग प्रोत्साहित एवं लागत जनित स्फीति
समग्र मांग, समग्र पूर्ति तथा मूल्य-स्फीति

मंदी स्फीति, स्फीति प्रत्याशायें एवं स्फीति विरोधी नीतियां
फिलिप्स वक्रः अवधारणा, अल्पकालीन व दीर्घकालीन विश्लेषण फ्रीडमैन का दृष्टिकोण व टोबिन का परिष्कृत फिलिप्स वक्र

खण्ड 5: व्यापार चक्र , मौद्रिक नीति व राजकोषीय नीति

मौद्रिक नीति के यंत्र
व्यापार चक्र : अवधारणाएँ एवं सिद्धांत
सैम्युल्सन का व्यापारिक चक्र सिद्धान्त
हिक्स का व्यापार चक्रीय सिद्धान्त
काल्डॉर का व्यापार चक्र सिद्धान्त
व्यापार चक्र विरोधक नीतियां
मौद्रिक नीति की प्रभावकता
विकासशील देशों में मौद्रिक नीति की भूमिका
राजकोषीय नीति की प्रभावकता
विकासशील देशों में राजकोषीय नीति की भूमिका